अभ्यास पत्रक

पाठ – शुक्रतारे के समान

नाम :- ………… कक्षा :- ………… अवधि :- ………….. अनुक्रमांक :- …….. प्राप्तांक :- …….

1. अपठित गद्यांश पढ़िए और उत्तर दीजिए – (3 अंक)

"महादेव का समूचा जीवन और उनके सारे कामकाज गांधीजी के साथ एकरूप होकर इस तरह गुँथ गए थे कि गांधीजी से अलग करके अकेले उनकी कोई कल्पना की ही नहीं जा सकती थी।

कामकाज की अनवरत व्यस्तताओं के बीच कोई कल्पना भी न कर सके, इस तरह समय निकालकर लिखी गई दिन-प्रतिदिन की उनकी डायरी की वे अनगिनत अभ्यास पुस्तके, आज भी मौजूद हैं।

प्रथम श्रेणी की शिष्ट, संस्कार-संपन्न भाषा और मनोहारी लेखनशैली की ईश्वरीय देन महादेव को मिली थी।"

1. महादेव देसाई का जीवन किसके साथ पूरी तरह जुड़ा था?

उत्तर - ……………………………………………………………………………………………

2. उनकी कौन-सी रचनाएँ आज भी उपलब्ध हैं?

उत्तर - ……………………………………………………………………………………………

3. लेखक ने महादेव की भाषा और लेखन शैली को किस विशेषण से विभूषित किया है?

उत्तर - ……………………………………………………………………………………………

2. कथन और कारण पर आधारित प्रश्न – (2x1=2 अंक)

4. **कथन:** महादेव देसाई को गांधीजी का आत्मीयतम सहयोगी माना जाता था।
   कारण: वे गांधीजी के विचारों, लेखन, यात्राओं और आंदोलनों में पूर्णतया सहभागी थे।
   (क) A: सही, R: सही और R कथन की सही व्याख्या है।
   (ख) A: सही, R: सही पर R कथन की व्याख्या नहीं है।
   (ग) A: सही, R: गलत
   (घ) A: गलत, R: सही
5. **कथन:** महादेव देसाई केवल एक लेखक भर थे।
   कारण: उन्होंने राजनीति या आंदोलनों में कोई सक्रिय भूमिका नहीं निभाई।
   (क) A: सही, R: सही और R कथन की सही व्याख्या है।
   (ख) A: सही, R: सही पर R कथन की व्याख्या नहीं है।
   (ग) A: सही, R: गलत
   (घ) A: गलत, R: गलत

3. वस्तुनिष्ठ प्रश्न (MCQs) – (5x1=5 अंक)

6. पाठ "शुक्रतारे के समान" के लेखक कौन हैं?
   (क) महादेव देसाई (ख) स्वामी आनंद (ग) जमनालाल बजाज (घ) श्रीनिवास शास्त्री
7. गांधीजी ने महादेव देसाई को किस वर्ष अपना उत्तराधिकारी माना?
   (क) 1920 (ख) 1915 (ग) 1917 (घ) 1930
8. 'यंग इंडिया' और 'नवजीवन' साप्ताहिकों का प्रकाशन कहाँ से शुरू हुआ?
   (क) बंबई (ख) साबरमती (ग) पुणे (घ) मद्रास
9. गांधीजी की आत्मकथा का अंग्रेज़ी अनुवाद किसने किया?
   (क) हार्नीमैन (ख) लुई फिशर (ग) महादेव देसाई (घ) रविशंकर महाराज
10. महादेव देसाई की लेखनी को ब्रिटिश गवर्नरों ने कैसे बताया?
   (क) उबाऊ और धीमी (ख) तेज़ और कठोर (ग) मंत्रमुग्ध करने वाली (घ) औपचारिक और नीरस

egyanarchive

4. लघु उत्तरीय प्रश्न (प्रत्येक 2 अंक, कुल 6 अंक)

11. गांधीजी की अनुपस्थिति में महादेव देसाई का क्या योगदान रहा?

उत्तर - .....

.....

.....

12. महादेव की लेखन शैली को लेखक ने किस प्रकार वर्णित किया है?

उत्तर - .....

.....

.....

13. गांधीजी के साथ महादेव का संबंध केवल निजी ही नहीं था – कैसे?

उत्तर - .....

.....

.....

5. दीर्घ उत्तरीय प्रश्न – (4 अंक) *(उत्तर 100–120 शब्दों में दीजिए)*

14. महादेव देसाई का जीवन गांधीजी के विचारों और आंदोलनों का सजीव उदाहरण कैसे है?

उत्तर - .....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

6. निबंधात्मक प्रश्न – (5 अंक) *(उत्तर 160–180 शब्दों में दीजिए)*

15. "सच्चा सहयोगी वही होता है जो हर परिस्थिति में निःस्वार्थ भाव से साथ निभाए" – इस कथन को महादेव देसाई के जीवन के संदर्भ में स्पष्ट कीजिए।

उत्तर - .....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

उत्तर कुंजी

1. गांधीजी के साथ।
2. उनकी लिखी गई डायरियाँ और अभ्यास पुस्तिकाएँ।
3. प्रथम श्रेणी की शिष्ट, संस्कार-संपन्न और मनोहारी लेखन शैली।
4. (क)
5. (घ)
6. (ख)
7. (ग)
8. (ब)
9. (ग)
10. (ग)
11. लेख, भाषण, पत्राचार, संपादन और आंदोलन संचालन का उत्तरदायित्व।
12. सुंदर, साफ-सुथरी, मंत्रमुग्ध कर देने वाली लेखनी।
13. वे गांधीजी के लेखन, आंदोलन, यात्रा, मिलन और संवाद में बराबर सहभागी थे।
14. महादेव देसाई का जीवन गांधीजी के विचारों और आंदोलनों का जीवंत उदाहरण है। उन्होंने गांधीजी के सचिव, साथी, लेखक, संपादक, अनुवादक और आयोजक के रूप में अनेक भूमिकाएँ निभाईं। वे केवल गांधीजी के 'हम्माल' नहीं थे, बल्कि उनके विचारों को शब्दों में ढालने वाले भी थे। 'यंग इंडिया', 'नवजीवन' और गांधीजी की आत्मकथा के अंग्रेज़ी अनुवाद जैसी रचनाओं में उनकी भूमिका उल्लेखनीय है। आंदोलन की व्यस्तताओं के बीच भी वे लेख, डायरियाँ और पत्र व्यवहार में लगे रहते थे। उनकी सादगी, अनुशासन, विनम्रता और समर्पण उन्हें गांधीजी के अनन्यतम सहयोगी बनाते हैं।
15. सच्चा सहयोगी वही होता है जो अपने स्वार्थ से ऊपर उठकर, हर परिस्थिति में अपने साथी का साथ निभाए। महादेव देसाई इस कथन के सर्वोत्तम उदाहरण हैं। उन्होंने गांधीजी के साथ केवल राजनीतिक रूप से नहीं, बल्कि व्यक्तिगत और वैचारिक रूप से भी पूर्ण समर्पण किया। वे उनके सचिव ही नहीं, बल्कि आत्मीय मित्र, सहयोगी और वाणी बन गए थे। आंदोलनों की व्यस्तता, जेल यात्राएँ, पत्रकारिता, संपादन और साहित्य—हर क्षेत्र में उन्होंने गांधीजी का निःस्वार्थ सहयोग दिया। चाहे दिन हो या रात, सभा हो या रेलयात्रा, वे हर स्थान पर कर्तव्यनिष्ठ रहे। उन्होंने कभी दिखावा नहीं किया, न प्रसिद्धि चाही—केवल सेवा को ही लक्ष्य बनाया। आज के समय में महादेव देसाई जैसे सहयोगी मिलना दुर्लभ है। उनका जीवन हमें सिखाता है कि सच्ची सेवा और समर्पण ही किसी को महान बनाते हैं।